भारतीय समकालीन कला की विभिन्न धाराएं

डॉ0 रूचि रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग
श्री द्रोणाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दनकौर (गौतम बुद्धनगर)
ईमेलः gargdrruchi21@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 रूचि रानी

''भारतीय समकालीन कला की विभिन्न धाराएं'

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 24 pp. 151-158

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

सारांश

समकालीन कला का विकास सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित कलाकार की चेतना के निरंतर विकास के फलस्वरुप हुआ है। भारत में अधिकतर कलाकार अपने कला माध्यमों रीति पद्धतियों एवं शिल्पों के वैज्ञानिक विकास के साथ कला की वैचारिक आस्था के लिए सततः जागरूक हैं।

समकालीन कला में सभी कलाकारों की सृजनशीलता उनकी स्वयं की अंतःप्रेरणा से दिशा पा रही है। सभी कलाकारों की एक निजी शैली होती है जिससे हम कलाकार आरै उनकी कृति का पहचान सकते हैं। आज दिन प्रतिदिन कलाकार नए–नए कला प्रयोगो से जुड़ते जा रहे हैं। इसका कारण यही है कि कोई भी कलाकार अपनी शैली को किसी स्वरूप में प्रस्तुत कर सकता है। आज विभिन्न क्षेत्रों में, भिन्न–भिन्न शैलियों में नए–नए कलाकार अपनी स्वतंत्र चेतना के आलोक में मौलिक सृजन कर रहे हैं।

प्रस्तावना

समकालीन कला का विकास सामाजिक परिस्थितियो ं से प्रभावित कलाकार की चते ना के निरंतर विकास के फलस्वरुप हुआ है। भारत में अधिकतर कलाकार अपने कला माध्यमों रीति पद्धतियों एवं शिल्पों के वैज्ञानिक विकास के साथ कला की वैचारिक आस्था के लिए सततः जागरूक हैं।

समकालीन कला में सभी कलाकारों की सृजनशीलता उनकी स्वयं की अंतःप्रेरणा से दिशा पा रही है। सभी कलाकारों की एक निजी शैली होती है जिससे हम कलाकार और उनकी कृति को पहचान सकते हैं। आज दिन प्रतिदिन कलाकार नए–नए कला प्रयोगो से जुड़ते जा रहे हैं। इसका कारण यही है कि कोई भी कलाकार अपनी शैली को किसी स्वरूप में प्रस्तुत कर सकता है। आज विभिन्न क्षत्रों में भिन्न–भिन्न शैलियों में नए–नए कलाकार अपनी स्वतंत्र चेतना के आलाके में मौलिक सृजन कर रहे हैं।

"काल सापेक्ष कला की सृजनात्मकता के आतंरिक आरै बाहरी दोनों रूपों में परिवर्तन हुए हैं। सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक परिवर्तन वैचारिक कला में अंतर्निहित मूल्यों को जहां प्रभावित करती रही है, वहीं भौतिकता के विकास एवं यात्रिकता की गति के प्रभाव से इसके वाह्य रूप में परिवर्तित होते रहे हैं। कला के सृजन की आतंरिक गत्यात्मक कभी ठहरी नहीं है, क्योंकि कलाकार निरंतर वैज्ञानिक खाजों की तरह एक अनूठे दृश्य संसार के निर्माण के लिए प्रतिबंध रहे हैं। आज कला की आतंरिक संवदेना सुक्ष्म से सुक्ष्मतर होती जा रही है, जैसे किसी पिन की नाके पर समस्त वैचारिक संभावनाएं उजागर हो गई हो।"1 आज का कलाकार अपने कला माध्यमों, रीति पद्धतियों, एवं शिल्पों के वैज्ञानिक विकास के साथ कला की वैचारिक आस्था के लिए सतत् जागरूक है आज कला मात्र सजावटी वस्तुओं के रूप में नहीं बल्कि एक वृहत् वैचारिक उन्मेश को लेकर प्रस्तुत हुई है।

"आज का युवा कलाकार अपने माहौल परिवेश और राजे मर्रा के बुनियादी सवालों तथा सराकोरों से भी अपने को जुड़ा देख पा रहा है। वह प्ररेणा के लिए आज पश्चिम का नहीं अपने देश के आरा स्वामीनाथन को देखकर गर्व कर सकता है। अर्पिता सिंह, जोगिन चौधरी, जोगिन चौधरी, विकास भट्टाचार्य, गणेश पाईने, गुलाम मोहम्मद शखे, लक्ष्मणगौड, विवान सुंदरम, नलिनी मलानी, सुधीर पटवधर्न आदि ऐसे कई नाम है जिन्होंने बार–बार अपनी जड़ों को बहुत हद तक तोड़ा है।"2

समकालीन कला की अवधारणाओं को पर्याय रुप से समझने के लिए आधुनिक समाज की अवधारणाओं पर्यायो, सरोकारो, तात्पर्यों और परिवेश की त्रासदियो को समझना आवश्यक है। प्रभाववाद घनवाद अभिव्यंजनावद से शुरू होकर यह कला विभिन्न आंदोलनों को पार करती हुई आज हमारे सामने खड़ी है। समकालीन कला की धारणाओं को निम्न समूहों में बाटां जा सकता है।

1)– अमर्तू रूपांकन

2)–आकृति मूलक चित्रण

3)–लोककला आधारित रूपाकंन

4)–तंत्र आधारित रूपांकन

5)–फोटोग्राफी (छायाचित्र पर) आधारित रूपाकं न

6)–कप्यूटर आधारित रूपांकन

7)–इंस्टॉलेशन(संस्थापन कला)

8)–आज का संदर्भ नई दिशाएं

नई विधाएँ अमूर्त रूपांकन

अमूर्त कला भविष्य की कला है कोई भी कलाकार समसामयिक संवदेना को अभिव्यक्त करने के जोश में अमर्तूता के बहाव में बह जाता है और ऐसे अवसर पर इस साधारण से सच को भी भलू जाता है कि कला का संबंध अवधारणा से ज्यादा है चित्र धरातल से कम,। "फ्रासिस पिकाबिया" ने सर्वप्रथम 1908 ईस्वी में अमर्तू चित्र बनाया था और इसकी कला को परिभाषित किया था। पियटे मोंद्रियां ने इस परिभाषा को विवेक संगत सीमा तक पहुंचाया। लेकिन मोद्रियां का प्रभाव आधुनिक डिजाइन पद्धति के अलावा अन्य क्षेत्रों में नगण्य ही रहा।

"अमूर्त कला हमारी भावनाओं और संवेगों का एक दृष्टिगत संयोजन है। जिसे कलाकार कोई नाम नहीं देना चाहता, लेकिन उसकी उत्तजेना कुछ बिंबों या आकारों में ढलकर चित्र स्पेस में दिखाई देने लगती है। जिसमें कभी पहचाने हुए से आकार भी स्पष्ट व अस्पष्ट रूप से चले आते हैं या जिन्हें रोक पाना कलाकार के लिए असंभव ही नहीं उचित भी नहीं होता।"3

अमूर्त कलाकारों ने भारत में भी बहुत अच्छा काम किया है। उसमें अपनी सार्थकता को साबित करने का प्रयास किया है। अनेक कलाकारों में अमूर्त तरीके को अपनाकर कला को एक नया आयाम प्रस्तुत किया। उनमें से कुछ कलाकार इस प्रकार है।

अमर्तू कला से प्रभावित कलाकार

जी॰आर॰संतोष

जी॰आर॰ संतोष तंत्रकला के अमूर्त रूपाकारों के लिए प्रसिद्ध है। अमूर्त कला के परिदृश्य में तंत्र से प्रभावित जी॰आर॰संतोष के चित्रों के आकार बेहद सरलीकृत हैं लेकिन पूर्ण रूप से पहचाने जा सकने वाले आकारों का संपुजन होते हैं ।

नीरज गोस्वामी

नीरज गोस्वामी ने अपने चौकारे तथा बड़े आकार की पुरस्कृति में बिम्ब संकेत देकर भी चित्रगत ठोस आकारों को अमूर्त बोध से पुष्टता से बाधां था।

शिव नारायण सिंह अनिवेद

शिव के चित्रों के हर यात्रा आत्म बोध काव्य एवं लीला का गीत है। आत्मबोध के प्रति उनका आवेग पुराने पड़ गए औद्योगिक ढांचो से सर्वथा अलग नई दिशा की ओर एक सशसक्त साहस है।

ज्योति स्वरूप

ज्योति स्वरूप अक्सर मानस पटल पर अपने बिम्बों को अपने अंकन का माध्यम बनाते हैं। तथा

रासायनिक प्रयागे द्वारा उन्हें विस्तार दे कलात्मक रूपाकारों का निर्माण करते हैं।

आकृति मूलक चित्रण

आकृति मूलक कला अतीत की कला है। आकृति मूलक चित्रण में बहुत अच्छा काम भी हुआ है और खराब भी यह कलाकार के लिए बहुत सरल भी है और बहुत मुश्किल भी। भारत में अत्यंत उत्कृष्ट आकृति मूलक कला के पनपने के बहुत स्पष्ट आरै सशक्त प्रमाण मौजदू है। उसका सारा श्रेय बंगाल शैली, मंबु ई के प्रौग्रेसिव आर्टिस्ट एसोसिएशन, कोलकाता ग्रुप, मद्रास की प्रौग्रेसिव प्रेंटर्स एसोसिएशन और दिल्ली शिल्पी चक्र के अग्रणी कलाकारों को दिया जाना चाहिए।

यामिनी राय से जतिनदास तक सभी कलाकारों ने विश्वसनीय दृष्टि, शैली, तकनीक आरै गहरी प्रतिबद्धता के साथ आकृतिमूलक कला को अभिव्यक्ति दी है।

आकृति मूलक रूपांकन के प्रसिद्ध कलाकार

सूजा

सूजा की पेटिंग ऊर्जापूर्ण और जैविक अनुभूति से भरी रहती हैं। उनके पास उन सभी वस्तुओं के विषय में कुछ नया कहने के लिए है जिन्हे हम सही तौर पर जानते हैं, और वे इस नवीनता के लिए ऐसे मुहावरे और अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करते हैं जिसके बारे में पूरी तरह विश्वस्त हैं। उनके आत्मविश्वास का आधार आधुनिक कला की चित्रभाषा और तकनीक पर उनका पूर्ण अधिकार है।

के॰जी॰सुब्रमण्यम

के॰जी॰सुब्रमण्यम बंगाल शैली के संवेदनशील और कल्पना प्रवण कलाकार हैं। रेखा, रंगों के प्रयोग में उन्हें महारत हासिल है और वह इन दोनों का प्रयागे करते हैं।

के॰के॰हब्बर

के॰के॰हब्बर आलौकिक लय के एक समर्थ कलाकार हैं। वह ऐसे कलाकार हैं जो आकृतियों का नृत्य करता हुआ दिखा सकते हैं और उसी से आकृति मूलक कला पर उनके सहज और पूर्ण अधिकार को समझा जा सकता है।

पी॰टी॰रेड्डी

पी॰टी॰ रेड्डी बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार है। ऐसा कोई माध्यम नहीं है जिसमें उन्होंने काम ना किया हो या उस पर अपनी कला कुशलता की छाप न छोड़ी हो।

एन॰एस॰बेंद्रे

एन॰एस॰ बेंद्रे एक निष्ठावान कलाकार है जिन्हें बड़ौदा ग्रुप का प्रेरणा स्रोत होने का अद्वितीय का गौरव प्राप्त है। उन्होंने अपने शिष्यों को आधुनिकता के बुनियादी रुझानों को निकट लाने के उद्देश्य से अमूर्त काम किया था लेकिन एम एस विश्वविद्यालय ने फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स के डीन के पद से निवृत होने के बाद में मुंबई लौट आए तो उन्होंने वहां आकृति मूलक शैली में काम शुरू कर

दिया।

लोक कला मूलक चित्रण

लोक संस्कृति से जुड़े विविध पक्षों के लोक कलाकार अपनी सहज कलात्मक समझ के अनुरूप अपनी अभिव्यक्ति को रंगों और रेखाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता आया है। लोक कलाकारों का जीवन आम लोगों से भी नहीं देखा जा सकता। यह कलाकार जो कुछ बनाते हैं, उसमें उपयोगिता और सौंदर्य अभिरुचि दोनों तत्व मौजूद रहते हैं। कला यहां दूर से देखने की चीज नहीं होती लोग कला को जीते हैं भोगते हैं। आजादी के बाद लोक कला ने कुछ तरक्की तो अवश्य की है लेकिन जो खोया है वह भी कम नहीं है। कई कलाएं लुप्त हो गई है और कई कलाएं विकृत हो गई हैं।

लोक कला सिर्फ अमूल्य धरोहर ही नहीं कही जा सकती वरन् समृद्ध परंपरा, संपन्न सभ्यता एवं जीवन संस्कृति के इतिवृत्त है। यह कलाएं वस्तुतः किसी भी समाज के जनमानस का आईना होते है।

"लोक कलाकृतियां लोक सापेक्ष होती हैं उनमें निहित भावनाएं किसी एक व्यक्ति से संबंधित न होकर समस्त समाज से संबंधित होती है। लोक कलाकार ऐसे वातावरण में कार्य करता है जहां उसकी परंपराओं का कोई प्रतिद्वंदी नहीं होता। परंपरागत रुपों में भी दैनिक जीवन की आवश्यकतानुसार परिवर्तन आते रहते हैं। और तदनुसार कलाकृतियों में भी यतकिंचित सुधार कर लिया जाता है, लोक कला दैनिक जीवन से पूर्णतः संबधित रहते हैं।"4

आधुनिक भारतीय चित्रकला में लोक कला में सर्वप्रथम चित्रांकन करने का श्रेय यामिनी राय को है उन्होंने ही युवा कलाकारों को भारतीय धारा की ओर मोड़ने का प्रयत्न किया है। के॰ श्रीनिवासलु, पी॰एल॰नरसिंहमूर्ति, के॰ राजे, एम॰ कृष्णमूर्ति, रसिक रावल, देवयानी कृष्णा आदि ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने लोक भूमि पर स्थित चित्रांकन किया है। जिसमें राष्ट्रीयता एवं मौलिकता की भावना पूर्ण रूप से विकसित है।

लोक कला से प्रभावित कलाकार

नरेद्रं पाल सिंह

नरेद्रं पाल सिंह ने लोक कला को आधुनिक संवेदना से जोडकर वृहतर आयाम दिया है। गावं का जीवन वहां के बदलते रंग खेत नदी बगीचे इनका चित्रण नरेद्रं ने अपने चित्रों में किया है। नरेद्रं की कला दर्शाती है कि एक संस्कृति कैसे दूसरी संस्कृति को आत्मसात कर लेती है।

ए॰अल्फोसे

प्रारंभ मे इन्हांने ईसाई धर्म से संबधित विषयों पर चित्रकारी की लेकिन बांसुरी वाले कृष्ण की तंजौर शैली की चित्रकला ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि लोक कला शैली इनकी पहचान बन गई।

के॰एम॰आदिमूल के॰ एम॰ आदिमूलम की प्ररे णा देवी देवताओं के मंदिर रहे हैं उन्होनें पारंपरिक शिल्प आकृतियों एवं आकारों को अपने ढंग से बनाना प्रारंभ किया था।

पी॰गोपीनाथ

गोपीनाथ की कृतियों में लोक कला शैली का प्रभाव है पहले वे मधुबनी चित्रकला से प्रभावित थे उन्होंने लाके कला की सबसे बड़ी खूबी सादगी और निर्भीकता को अपने तरीके से प्रस्तुत किया है।

तात्रिक आधारित तंत्र आधारित रूपांकन

"कला में तात्रिकता का प्रवेश वज्रयानी युग से आरंभ हुआ और इसके बीज पहले से ही वैदिक युग में विद्यमान थे। जिसकी सर्वाधिक आकषर्क और अभिव्यक्ति श्री चक्र में हुई।"5

तंत्र वह युक्ति है जिसके माध्यम से आत्यतिक तत्व के रहस्य को भेदा जा सकता है अर्थ तंत्र वह साधना है जो कार्य मंत्र द्वारा सिद्ध नहीं होता उसे संपन्न करने के लिए जो त्वरित उपाय खोजा गया है वह तंत्र ही है तंत्र एक विधायक विद्या है जिसकी अभतू पूर्व खाजे है स्वास्तिक का चिन्ह (चै)।

"तांत्रिक कला की दूसरी उपलब्धी त्रिकोण है यह जो महाशून्य हैं वह शैवगेमां का परम शिव और शाक्तों की महाशक्ति है।"6

वर्तमान चित्रकला के इतिहास में ऐसे प्रयोग अजीत मुखर्जी ने किए थे। 1968 जब अजीत की पुस्तक प्रकाशित हुई थी तो स्वयं पिकासो ने उसकी 40 प्रतियां खरीदी थी। अजीत ने इसके बाद "तंत्रासंन" आरै "तंत्रो वे नाम से दो पुस्तकें और प्रकाशित की। कुंडलिनी शीर्षक से अजीत ने लगभग 40 चित्र बनाए जो विभिन्न चक्रों से होकर सहस्रार तक जाती है। मुखर्जी स्वयं तंत्र साधक थे। सत्यजीत राय ने देवी फिल्म अजीत मुखर्जी की कला से प्रेरित होकर बनाई थी।

तंत्र कला से प्रभावित कलाकार

जी॰आर॰ संतोष

"जी॰आर॰ संतोष ने तांत्रिक संबंधी जो भी प्रयागे किए हैं। वह मिश्रित तथा व्यवहारिक अधिक है संतोष के जैविक कोष में जो प्रभाव उन्हें अनुवांशिकता से मिले हैं वह निसगर्त : शैव है। लेकिन उनके चित्र शैव और सूफी का विरल मेल हैं।"7

रजा अपने चित्रों में बिंदु को अपनी जिंदगी और अनुभव के संदर्भ में देखते हैं इसी के साथ साथ भारतीय मूर्तिकला के दृश्य पटल पर रहस्य और तंत्र से प्रभावित होकर भी अमूर्त अवधारणा को एक नए संदर्भ और अर्थ में प्रस्तुत करते हैं।

फोटोग्राफी छायाचित्र उन पर आधारित रूपांकन

कलाकारो ं द्वारा फोटोग्राफी को एक सशक्त कला माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया। यह स्वीकृति 1960 से ही दिखाई देने लगी। यह वास्तविकता है कि प्रत्ययवादी कलाकार कला की वस्तु परखता का विरोध कर रहे थे। इस मानसिकता ने कला चिंतन और कला सृजन दोनों को प्रभावित किया और इससे वे कलाकार भी अछूते नहीं रहे। जिन्होंने फाटे ोग्राफी को अपनी अभिव्यक्ति का साधन बना लिया था।

ज्योति भट्ट

"ज्योति भट्ट मूलतः चित्रकार है, जो बाद में पेंटिंग से छायाकला की तरफ जुडे और फोटोग्राफी को समृद्ध करने लगे हैं। उनको कैमरे की सीमाओं का गहरा ज्ञान है और वे स्वीकार भी करते हैं कि फोटोग्राफी मे ं दुनिया खंडो ` और प्रवृत्तियों में ही उजागर होती है।"8

कंप्यूटर आधारित रूपांकन

आजकल सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का महत् प्रयोग होता है। चित्रकला का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है सृजन के क्षेत्र में इस माध्यम पर कई कलाकारों ने प्रयोग किए हैं और अद्भतु रचना सषजित की हं। नरेद्रं दीक्षित

नरेद्रं दीक्षित की अभिव्यक्ति पारंपरिक चित्र माध्यमों से गजु रती हुई फोटोग्राफी तक आने के बाद अब कंप्यूटर जनित रूपांतरण तक आ पहुंची है।

संस्थापन(इंस्टॉलेशन) कला

कला के विभिन्न माध्यमों के संसाधनों के वैज्ञानिक विकास में अभिव्यक्ति की संभावनाओं को अधिक स्फूर्त बनाया। उसके गतिमान रूप कैनवस पर ही नहीं रुक कर रह गए। एक्रेलिक और जल रंगों में सैरीग्राफी और फोटोलिथो में ही अभिव्यक्ति का विकास नहीं हुआ, बल्कि संस्थापन के एक आकार संयोजन का भी प्रादुर्भाव हुआ। कला के लिए यह उपक्रम आसान नहीं है बल्कि अधिक कठिन है लेकिन अभिव्यक्ति के लिए कलाकारों ने इसे आवश्यक समझा है क्योंकि कलाकार सृजनात्मक अभिव्यक्ति के घिसे पिटे तरीकों से संभवतः उब गए थे।

संस्थापन (इंस्टॉलेशन) से प्रभावित कलाकार

वेद नायर

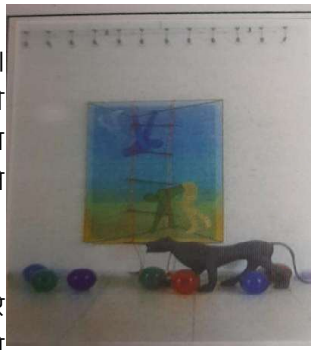

वेद नायर ने कागज के उपयागे से अनेक बार संरचनाएं की हैं। पिछले दिनों कागज की लुगदी को ढालकर किया हुआ एक नया प्रयागे देखने को मिला। नई सहस्राब्दी का डी॰एन॰ए 2000। संरचनात्मक शिल्प प्रतिस्थापन के जरिए वदे ने कागजी लुगदी से विचारोत्तेजक तथ्य सामने रखा।

वीरेन तंवर

वीरेन तंवर ने अपनी रचना अर्थ की खाजे में इंस्टॉलेशन की आरे झुकाव दिया है। साथ ही रंगों के प्रयागे में वह पूर्ण रूप से सक्षम लगते हैं दोआयामी सतही चित्र तथा फर्श पर आयोजित त्रिआयामी ठोस रंगीन गोलों तथा शरे ही ठोस आकृ ति एक सर्कसनुमा वातावरण पैदा करता है।

आज का संदर्भ नई दिशाए ं नई विधाए ं

"दृश्यकलाओं का सीधा संबंध अंतराल को क्रियाशील और संगठित करने से है जिससे कि इस अंतराल का सीधा प्रत्यक्षीकरण किया जा सके। जिस अंतराल को आमतौर पर कार्इ नहीं देखता या देख कर भी अनदेखा कर देता है, उसे कलाकार इतना सजीव बनाता है कि लागे देखने पर मजबूर हो और उसे देख कर आनंद की अनुभूति करें।"9

एक संपूर्ण नई विद्या या दिशा जो आने वाले समय में काफी चर्चा का विषय बन सकता है।यह दृश्य कलाओं का अंतर्निहित सिद्धातं है विनीत कुमार ने इस सिद्धातं को साकार रूप देने का प्रयास किया है। पिछले दिनों विनीत कुमार द्वारा प्रस्तुत "ए पिक्चर फ्रेम" ऐसी ही एक नई विद्या की ओर संकेत करता है।

निष्कर्ष

अतः आज के दौर में वैज्ञानिक संचार व्यवस्था, शीघ्र –अतिशीघ्र, यातायात व्यवस्था एवं कला साहित्य के कारण भारतीय कलाकार आज अंतर्राष्ट्रीय प्रारूपों से पूरी तरह परिचित है। वास्तव में इन दशकों में भारतीय आधुनिक कला आधुनिकता का आवरण त्याग कर भारतीय समकालीन कला में प्रतिष्ठित हो चुकी है।

संदर्भ ग्रंथ

1)–अमन अवधेश *समकालीन कला* अंक 17 पृ0 **15**

2)–व्योहार राम मनोहर सिन्हा – *समकालीन कला* अंक – 13 पृ0 – **7**

3)–भारती मीनाक्षी – समकालीन कला –अंक –13 पृ0–**61**

4)– डॉ॰ अग्रवाल जी॰के॰(अशाके)– *कला निबंध*– पृ0 **125**

5)– हरिदासन के॰वी॰–*समकालीन कला*– अंक–3/4 पृ0–**37**

6)– हरिदासन के॰वी॰–*समकालीन कला*– अंक–3/4 पृ0–**37**

7)– कैलाष वाजपेयी – *समकालीन कला* अंक–13 पृ0 **35**

8) – पल्लवी शर्मा – *समकालीन कला* अंक–17 पृ0 **53**

9) –डॉक्टर रंजन घोष– *समकालीन कला* अंक–18 पृ0 **30**